इस ब्रह्माण्ड में हर जीवित वस्तु का आधार उसके शरीर में मौजूद उसका 'जैविक कोड' यानी डी.एन.ए.® है। विज्ञान यह सिद्ध कर चुका है कि 'डाई न्यूक्लियाई एसिड' से पूरे जीव को विकसित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में जीवन का अंत तभी हो सकता है जब होगा डी.एन.ए.का...

अंत

संजय गुप्ता की पेशकश

कथाः	चित्रः	इंकिंगः	कैलीग्राफी व कलरः	सम्पादकः
जॉली सिन्हा	अनुपम सिन्हा	विनोदकुमार	सुनील पाण्डेय	मनीष गुप्ता

® डी.एन.ए. (D.N.A.) डाई न्यूक्लियाई एसिड का संक्षिप्त रूप है।

visit us at: www.rajcomics.

राजनगर की सीमा पर- महानगर की तरफ जाने वाली सड़क पर, महानगर की तरफ बढ़ते इस काफिले को कड़ी सुरक्षा ने अपने घेरे में लिया हुआ था-
ऊंवाऊंवाऊंवाऊंवाऊं
POLICE
और इस सुरक्षा घेरे का नेतृत्त्व कर रहा था-
खुद सुपर कमांडो ध्रुव-
ऐसा हमको पहली बार करना पड़ा है ध्रुव! लेकिन हम भी पहली बार ही दो अत्यन्त खतरनाक मुजरिमों को एक साथ महानगर पुलिस के हाथों सौंपने जा रहे हैं! और इन दोनों को अगर कोई संभाल सकता है तो सिर्फ तुम!
क्योंकि इन दोनों को पकड़ने वाले भी तुम ही हो!
राजनगर पुलिस ने बहुत चालाकी से काम लिया है! अगर ध्रुव यहां पर न होता तो मुझे भागने से कोई रोक नहीं सकता था!
अगर ध्रुव न होता तो तुम राजनगर के अपराध जगत के राजा होते और मैं दुनिया का महाराजा!
अरे, सपने देखना छोड़ जूलू, और महानगर पुलिस के डंडे की तैयारी कर ले!
हे भगवान! इस बार बचा ले तो मैं सीधा अफ्रीका जाकर ही रुकूंगा!
भगवान तेरी सुन ले तो मुझे भी साथ ले चलना, भाई!

कभी- कभी भगवान, शैतान की भी सुन लेता है-
क्या बात है ध्रुव? तुम रुक क्यों गए? तुम्हारे पीछे सारा काफिला भी रुक गया है!
ऊपर देखिए इंस्पेक्टर!
POLICE
ओ माई गॉड! हवा... हवा में दो चट्टानें तैर रही हैं! ... और... और लगता है कि ये राजनगर पर ही गिरने वाली हैं!
ये अच्छे खासे आकार की उल्काएं हैं इंस्पेक्टर! और अगर ये धरती से टकरा गईं तो राजनगर ही नहीं, इससे सैकड़ों गुना बड़ा एरिया तबाह हो जाएगा!
ले... लेकिन इन उल्काओं के गिरने की रफ्तार बहुत धीमी है, या मुझे दूरी के कारण ऐसा लग रहा है!
तभी-
भय से थर- थर कांपते राजनगर वासियों ने एक अजीब दृश्य देखा-
नीचे वाली चट्टान का एक टुकड़ा टूटकर ऊपर वाली चट्टान की तरफ बढ़ा-

शायद दोनों उल्काएं आपस में ही टकराकर टूटने वाली थीं-
लेकिन ऐसा हुआ नहीं! सिर्फ वह छोटा पथरीला टुकड़ा ही टूटा-
लेकिन उसके टूटने से भी जो गुबा पैदा हुआ, उसने राजनगर के आक को ढक लिया-
इस गुबार में उल्काएं दिखनी बन्द हो गई हैं! लेकिन वे हैं कहां? अब तक तो उनको...
...जमीन से टकरा जाना चाहिए था!
टकराव उतना भीषण नहीं था जितना ध्रुव ने अनुमान लगाया था-
लेकिन फिर भी 'शॉक-वेव्स' ने सभी गाड़ियों और इंसानों को हवा में तिनकों की तरह उड़ा दिया-

और जब सभी संभलकर खड़े हुए तो उनके सामने एक और खतरनाक मुसीबत मौजूद थी-
ये... ये क्या चीज है, ध्रुव ?
मुझे तो यह कोई परग्रही लगता है! जो न जाने कैसे उल्का के साथ-साथ पृथ्वी पर आ गया है!
वायरस! यही मौका है! भाग लेते हैं!
भाग लेंगे! पर जरा रुको तो! मुझे इस प्राणी के अंदर कुछ ऐसी चीज होने का आभास हो रहा है, जो हमारे मतलब की हो सकती है!...

सुरक्षा अधिकारी ने उस प्राणी के इस तरह से आ जाने का सीधा सा मतलब निकाला-
इस प्राणी को जरूर डॉक्टर वायरस या जुलू ने बुलाया है! दोनों में ही ऐसा प्राणी बना सकने की क्षमता है! यह उनको छुड़ाने आया है! खत्म कर दो इसे!
तड़
तड़तड़तड़
तड़तड़
लेकिन उस प्राणी तक पहुंचते ही आप बनकर उड़ गईं-
गोलियों से उस प्राणी को नुकसान तो नहीं पहुंचा-
हवा में गोलियां उड़ने लगीं-
लेकिन ऐसा करके सुरक्षाकर्मियों ने अपने आपको नुकसान जरूर पहुंचा लिया था-
क्योंकि ऐसा करके उन्होंने अपने आपको उस प्राणी का दुश्मन साबित कर दिया था-
ओफ! इसको रोकना होगा! वर्ना ये सचमुच वायरस और जुलू को भागने का मौका दे देगा!

ध्रुव के उस वार ने सुरक्षाकर्मियों पर मंडराते खतरे को टाल दिया-
तड़ाक
लेकिन खुद ध्रुव के गले मुसीबत आ पड़ी-
ओफ्फ! मुझे इस प्राणी की शक्तियों के बारे में कुछ भी पता नहीं है! इसलिए मैं इसको काबू में करने का कोई तरीका सोच नहीं पा रहा हूं!
जुल्लू की बेचैनी बढ़ती जा रही थी-
तू नहीं चलता तो नहीं चल वायरस! मैं तो चला!
रुक तो जुल्लू! मुझे इस प्राणी की असलियत का पता लगाने दे!
कैसे पता लगाओगे? हथकड़ी की मदद से?
वायरस कभी खाली हाथ नहीं रहता जुल्लू!
मेरे जूते की एड़ी में रखे इस यंत्र से अभी इस प्राणी की असलियत सामने आ... अरे! यह तो सचमुच एक परग्रही है! यानी इसके अन्दर दूसरे ग्रह के बैक्टीरिया और वायरस होंगे! और उन वायरसों की पृथ्वी पर कोई काट नहीं होगी!
अगर हम इस प्राणी को कब्जे में ले सकें तो पूरी दुनिया हमारे कदम चूमेगी जुल्लू!

लेकिन ये हमारे कब्जे में आयेगा कैसे ?
मौके का इन्तजार करो। ध्रुव इनको किसी न किसी तरह से हरा ही देगा। फिर मौका पाकर हम इनसे ले उड़ेंगे।
तब तक हथकड़ियाँ खोलने की कोशिश करते हैं।
लेकिन उसको सफलता नहीं मिल रही थी-
आऽऽऽह! मैं भी समय खराब कर रहा हूं। जिस पर गोलियों ने असर नहीं किया उस पर भला 'स्टार ब्लेड्स' क्या असर डालेंगे ?
आऽऽऽह! इसके मुंह से निकलती फुहार ने मेरे पूरे शरीर में जलन पैदा कर दी है!
अगले ही पल- उस जलन में दर्द भी शामिल हो गया-
आऊ! ये चट्टानें तो बेहद सख्त होने के साथ-साथ बेहद गर्म भी हैं!

वाह! वार असर कर रहे हैं। और ये प्राणी कोई प्रतिरोध भी नहीं कर पा रहा है। इन चट्टानों में जरूर कोई ऐसी चीज है जो इस प्राणी की शक्ति को नष्ट कर सकती है।
हो सकता है कि इस प्राणी को इस चट्टान में कैद करके किसी ने अंतरिक्ष में छोड़ दिया हो!
ये ध्रुव भी कमाल की चीज है। कितनी आसानी से इतने खतरनाक प्राणी को पीट रहा है।
जो हम जैसों को पीट सकता है उसके लिए ये प्राणी भला क्या चीज है। लेकिन हमारे लिए यही मौका है! वह प्राणी नीचे गिर चुका है!

तुमने ये लाइन बहुत बार सुनी होगी ध्रुव! घिसीपिटी लाइन है, पर एक बार और सुन लो! तुमने कमाल कर दिया, यार! एकदम सॉलिड कमाल!
खींच! फटाफट झाड़ियों में खींच!
ये... ये तो गल रहा है, वायरस!
इसको हम भला अपने साथ कैसे ले जाएंगे?
बोतल में भरकर?
ध्रुव और इंस्पेक्टर में से कोई भी इस नई घटना पर ध्यान नहीं दे रहा था-
कमाल तो तब होता, इंस्पेक्टर! जब मैं वायरस और जुलू को भी भागने से रोक सकता!
वायरस और जुलू इस अफरा-तफरी का फायदा उठाकर भाग गए हैं! आप तुरन्त इस एरिया की सारी सड़कें सील करवा दीजिए! वर्ना इस प्राणी से भी बड़ा खतरा, राजनगर पर मंडराने लगेगा!
वे दोनों तो मामूली खतरा हैं ध्रुव!
बड़ा खतरा तो...

... मैं हूं!
इस इंस्पेक्टर का हुलिया तो उस प्राणी जैसा हो गया है, और ये हरकतें भी वैसी ही कर रहा है!
ये क्या चक्कर है वायरस?
ये चक्कर समझने के लिए यहां कुछ देर और रुकना पड़ेगा, जुलू!
इंस्पेक्टर! ये... ये तुमको एकाएक क्या हो गया है! संभालो अपने आपको!

ध्रुव ने एक बार फिर वही ट्रिक आजमानी चाही जिससे परग्रही काबू में आया था-
कड़ंककक
इस बार तू मुझे बेहोश नहीं करेगा, ध्रुव।
लेकिन इस बार यह चाल नाकामयाब रही-
बल्कि मैं तेरी जान लूंगा!
आsssह!
कमाल है! यह तो ऐसे बोल रहा है जैसे इंस्पेक्टर ही पहले वाला प्राणी हो! कहीं यह किसी आत्मा का चक्कर तो नहीं है जो परग्रही का शरीर छोड़कर इंस्पेक्टर में घुस गई हो!

ध्रुव के पास अब बचने का कोई रास्ता नहीं था-
धांय धांय
लेकिन तभी इंस्पेक्टर का ध्यान दूसरी तरफ खिंच गया-
पीछे ट्रक में बैठे अन्य सुरक्षाकर्मी भी अब संभलकर इस लड़ाई में शामिल हो गए थे-
लेकिन ये लड़ाई देर तक चलने वाली नहीं थी-
आऽऽऊ ये...
ये तो आंखों से
किरणें छोड़ रहा
है.
भागो
इंस्पेक्टर को अपने ही सिपाहियों की जान लेने से रोकना होगा!
DIESEL
किरणों के संपर्क में आते ही डीजल टैंक-

एक धमाके के साथ इंस्पेक्टर के मुंह पर ही फट पड़ा-
इससे इसकी शक्तियों में कमी जरूर आएगी!
और मुझे इस पर वार करके इसको काबू में करने का मौका मिल जाएगा।
लेकिन-
आऽऽऽह! इस पर तो धमाके का असर ही नहीं हुआ! बल्कि इसने आश्चर्यजनक फुर्ती दिखाते हुए मुझे पकड़ लिया है!
और मुझको ऊर्जा के तेज झटके लग रहे हैं!
इंस्पेक्टर में ये आश्चर्यजनक शक्तियां एकाएक कैसे आ गईं?
ध्रुव की आंखों के आगे छाता अंधेरा, मौत का अंधेरा बन गया होता-
अगर एक बार फिर इंस्पेक्टर का ध्यान न बंट गया होता-
बस! अब तू और आगे नहीं जाएगा...

... जज्जुला!
तू... तू भी मेरे पीछे यहां तक आ ही गया, मट्टाक!
अच्छा ही हुआ! तेरी मौत शायद इसी ग्रह पर लिखी थी।

मौत? ओह! तू अभी पृथ्वीवासी के शरीर में है, इसीलिए उसी की भाषा बोल रहा है! हम इसको अंत कहते हैं. और आज तेरे अस्तित्व का अंत मैं करूंगा!
लेकिन तेरे पास कई वार हैं! इस नस्ल शरीर में मौजूद रसायनों ने मुझे वे नई शक्तियां दे दी हैं, जिनकी तू कल्पना भी नहीं कर सकता!
तू अपना वार कर चुका है मट्टाक! उस व ने मुझे कमजोर जरूर किया है! पर मैं अभी तव जीवित हूं! अब तेरे पास कोई वार नहीं बचा है!
ओह! अभी तक तो एक ही मुसीबत थी! पर अब मुसीबत डबल हो गई है!
इस लड़ाई के बीच में पड़ना मूर्खता होगी! इस लड़ाई के परिणाम का इंतजार करना होगा!

ायरस और जुलू भी रोबॉट मट्टाक
के अचानक आ जाने से चौंक गए थे-
ये नई मुसीबत कहां से आ गई?
कहानी में ट्विस्ट आ रहा है, जुलू! एक नया मोड़! लेकिन ये मोड़ भी हमारे लिए फायदेमंद है! ध्रुव तो कमजोर पड़ रहा था, लेकिन ये रोबॉट कभी कमजोर नहीं पड़ेगा...
पर अब रुककर क्या करोगे? वह प्राणी तो गल चुका है!
नहीं जुलू! उस प्राणी का शरीर गला है! लेकिन वह प्राणी अभी भी मौजूद है! इंस्पेक्टर के शरीर में! अब हमको इंस्पेक्टर का शरीर हासिल करना है! मौके का इंतजार करो!
नज्जुला और मट्टाक के बीच
में चल रही लड़ाई जोर पकड़
ही थी-
तुझे मैं जलाकर खाक कर दूंगा, मट्टाक! हम दोनों में से कोई एक ही अपना अस्तित्व कायम रख सकता है! और अस्तित्व कायम रहेगा तो सिर्फ मेरा!
तू मिटेगा मट्टाक! नष्ट हो जाएगा तू!
तुझे ये आश्चर्यजनक शक्तियां इस शरीर की संरचना के कारण मिली हैं! पर तू अभी कमजोर है!...

और इस कमजोर हालत में तू मुझ पर नहीं, बल्कि मैं तुझ पर भारी पड़ूंगा!
अब तेरा अंत होने वाला है, जज्जुला!
ओह! रोबॉट, उस दूसरे प्राणी को खत्म करना चाहता है! अब तक मैंने जो कुछ सुना है उसके अनुसार दूसरा प्राणी किसी तरह से इंस्पेक्टर के शरीर में घुस गया है! अब अगर वह प्राणी नष्ट होता है तो उसके साथ-साथ इंस्पेक्टर का शरीर भी नष्ट हो जाएगा! मैं ऐसा नहीं होने दे सकता!
मुझे रोबॉट को रोकना ही होगा...
...रोकना ही होगा!
ध्रुव भी इस लड़ाई में शामिल हो गया

? मैंने तुझको बचाया था, ौर तू मुझ पर ही हमला कर रहा है!
बचाने के लिए मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूं! लेकिन मैं तुमको इंस्पेक्टर को मारने की इजाजत नहीं दे सकता!
तो फिर तू नहीं रहेगा!
स्पेक्टर! ये इंस्पेक्टर हीं है! ये इंस्पेक्टर था! ब ये जज्जुला है!
मैं समझ गया! लेकिन ये शरीर इंस्पेक्टर का है! और इंस्पेक्टर का शरीर, मेरे रहते नष्ट नहीं होगा!
ध्रुव और रोबॉट आपस में उलझे हुए हैं! और इंस्पेक्टर बेहोश पड़ा है! यही मौका है जुलू!
मेरी शक्तियों को जानता हीं है! तुझे मारना मेरे लिए च्चों का खेल है!
ये सही कह रहा है! मैं इसकी शक्तियों को जानता नहीं हूं! इसलिए इससे निपटने का कोई प्लान भी मेरे पास नहीं है!

अगले ही पल- इंस्पेक्टर रूपी जज्जुला पर छाती हुई बेहोशी और गहरा गई-
और देखते ही देखते जज्जुला, घटनास्थल से गायब हो चुक
लेकिन जज्जुला के गायब होने की खबर किसी को भी न
क्योंकि उसका अपहरण रोक सकने वाले दोनों लोग आपस में ही भिड़े हुए थे-
इस रोबॉट के शरीर में कोई न कोई कमजोर जगह जरूर होगी ! लेकिन वह कमजोर जगह मैं ढूंढूं कैसे ? ये तो मुझे पास फटकने तक नहीं दे रहा है!
वह कम जगह ढूंढ लिए मदद क होगी
चीं चीं चीं चीं ऽऽ

ध्रुव की पुकार पर दर्जनों चिड़िया, मट्टाक पर टूट पड़ीं-
अब मट्टाक मुझ पर वार नहीं कर सकता। मुझे सिर्फ यह देखना है कि मट्टाक किस अंग पर हो रहे वारों को बचाने की सबसे ज्यादा कोशिश करता है।
वह अपने सबसे कमजोर अंग को ही बचाने की कोशिश करेगा।
मिल गई इसकी कमजोर नस! ये अपनी कनपटी पर लगे तंतुओं को बचाने की कोशिश कर रहा है!
अब मुझे सिर्फ इसके तंतुओं तक पहुंचकर उनको उखाड़ना है!
स्टार लाइन, मट्टाक के पैरों में जा उलझी-
और मट्टाक नीचे आ गिरा-

और ध्रुव मट्टाक के तंतुओं तक पहुंचने में सफल हो गया लेकिन-
आऽऽऽह! ये तंतु तो काफी मजबूत हैं। मैं इन्हें उखाड़ नहीं पा रहा हूं।
अगले ही पल- मट्टाक की आंखें दहक उठीं-
छोड़ दे मेरे तंतुओं को! वरना तू जलकर खाक हो जाएगा!
आऽऽऽह! मट्टाक ने खुद ही मुझको वह अस्त्र दे दिया है, जिससे मैं तंतुओं को इससे अलग कर सकूं।
ब्रेसलेट की चमकती सतह ने, गर्म किरण को परावर्तित करके उसे-
तंतुओं की तरफ ही मोड़ दिया-
और तंतु जलकर, मट्टाक के शरीर से अलग हो गए-
तंतुओं के अलग होते ही मट्टाक के शरीर में चिंगारियां फूटने लगीं-
और उसके शरीर के अंग अलग-अलग होने लगे-

ये... ये क्या ? इसके शरीर से एक किरण फूटकर आकाश में तैरती हुई, उस दूसरी चट्टान की तरफ जा रही है !
और वह चट्टान भी उड़ती हुई आकाश में गुम हो रही है। ये चक्कर क्या है ?
इस चक्कर को तो बाद में समझूंगा ! फिलहाल तो मुझे इंस्पेक्टर को उसके वास्तविक रूप में वापस लाने का प्रयास करना होगा ! ...
... अरे ! इंस्पेक्टर यानी जज्जुला यहीं पर तो बेहोश हुआ था ! फिर वह कहां गायब हो गया ?
ये हथकड़ी ! इसको तो वायरस या जुलू ने पहना हुआ था ! इसका यहां पर मिलना दो बातें बताता है !
एक तो यह कि वायरस और जुलू आजाद हो चुके हैं, और दूसरा यह कि वे जज्जुला यानी इंस्पेक्टर को उठा ले गए हैं !
लेकिन वे जाएंगे कहां ? जल्दी ही पकड़े जाएंगे ! क्योंकि मैं अभी 'रेड एलर्ट' की घोषणा करवाने जा रहा हूं !

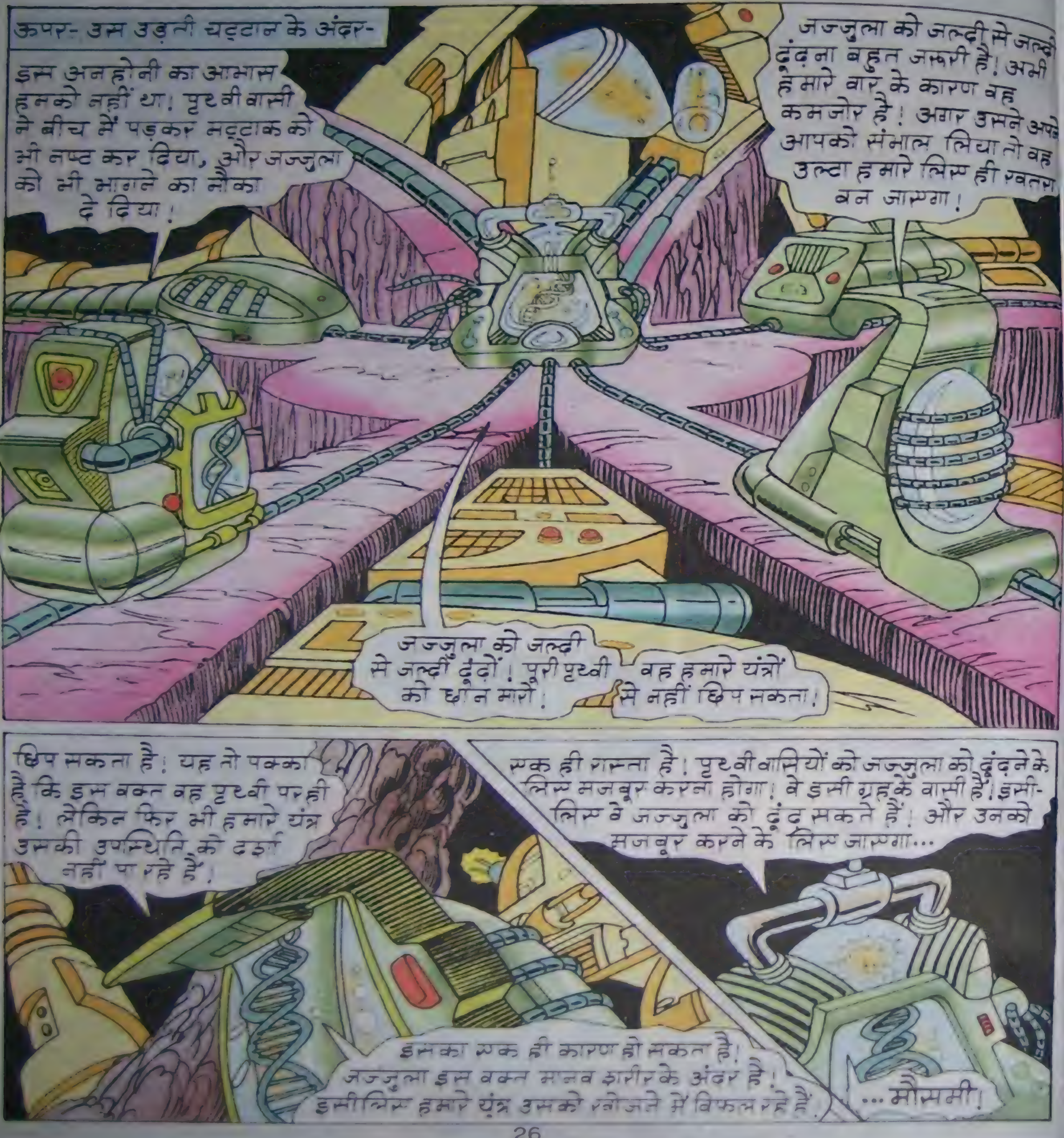
ऊपर- उस उड़ती चट्टान के अंदर-
इस अनहोनी का आभास हमको नहीं था। पृथ्वी वासी ने बीच में पड़कर नट्टाक को भी नष्ट कर दिया, और जज्जुला को भी भागने का मौका दे दिया!
जज्जुला को जल्दी से जल्दी ढूंढना बहुत जरूरी है! अभी हमारे वार के कारण वह कमजोर है! अगर उसने अपने आपको संभाल लिया तो वह उल्टा हमारे लिए ही खतरा बन जाएगा!
जज्जुला को जल्दी से जल्दी ढूंढो! पूरी पृथ्वी को छान मारो!
वह हमारे यंत्रों से नहीं छिप सकता!
छिप सकता है! यह तो पक्का है कि इस वक्त वह पृथ्वी पर ही है! लेकिन फिर भी हमारे यंत्र उसकी उपस्थिति को दर्शा नहीं पा रहे हैं!
इसका एक ही कारण हो सकता है! जज्जुला इस वक्त मानव शरीर के अंदर है! इसीलिए हमारे यंत्र उसको खोजने में विफल रहे हैं!
एक ही रास्ता है! पृथ्वी वासियों को जज्जुला को ढूंढने के लिए मजबूर करना होगा! वे इसी ग्रह के वासी हैं! इसीलिए वे जज्जुला को ढूंढ सकते हैं! और उनको मजबूर करने के लिए जाएगा...
...मौसमी!

राजनगर में-
पुलिस, सी. आई.डी., क्राइम ब्रांच, सभी के जवान सिर्फ वायरस और जुलू को खोजने में लगे हुए हैं। लेकिन उनका कोई पता नहीं चल पा रहा है!
यानी वे राजनगर से बाहर जा चुके हैं!
ये असंभव है, ध्रुव! राजनगर के हर रास्ते पर आने-जाने वालों की कड़ी चेकिंग हो रही है!
वायरस और जुलू मामूली अपराधी नहीं हैं पापा! आप सिर्फ जमीनी रास्तों पर पहरे बिठा सकते हैं! लेकिन कई ऐसे जलमार्ग भी हैं जो एक शहर को दूसरे शहर से जोड़ते हैं!
मुझे पक्का यकीन है कि जुलू और वायरस किसी नदी के रास्ते भागे हैं! हमको सिर्फ ये सोचना है कि वायरस भागकर कहाँ जा सकता है?
उसके सारे अड्डों पर पुलिस की निगरानी है!
अब वह वहां पर आया तो जरूर पकड़ा जाएगा!
तभी-
एक गरज ने बातचीत में व्यवधान डाल दिया-
घरड़ गड़गड़गड़
लो! बाहर बादल गरज रहे हैं! ये जरूर मानसून की बारिश है!
लेकिन मानसून आने में तो अभी दस दिन हैं! और आसमान तो अभी तक एकदम साफ था!
ओ माई गॉड! पापा बचिए! बिजली गिर रही है!
कड़ड़
ये सब कुछ प्राकृतिक नहीं लग रहा है! इसके पीछे कोई और कारण है!

मुझे बाहर जाकर इसका कारण ढूंढ़ना होगा!
संभलकर ध्रुव! प्रकृति से कोई नहीं लड़ सकता!
प्रकृति से इंसान नहीं लड़ सकता! लेकिन ये काम प्रकृति का नहीं लग रहा है। ...क्योंकि बिजलियां इमारतों को निशाना बना रही हैं। और प्रकृति कभी निशाना नहीं साधती।
और फिर ये बिजलियां बिना बारिश के ही गिर रही हैं। ऐसा तो मैंने पहले कभी नहीं देखा।
पर अब मैं करूं तो क्या करूं?
इस कहर का कारण हवा में ऊपर तैर रहा था-
देखो! यही वह मानव है जिसके कारण जज्जुला गायब हो गया है! इसको अवश्य पता होगा कि जज्जुला कहां है! मौसमी को इससे सच उगलवाने का आदेश दो!
अगले ही पल - गिरती बिजलियों का निशाना बदल गया -
य... यह क्या? अब बिजलियां मुझको निशाना बना रही हैं! पर क्यों?
क्योंकि तू जज्जुला का पता जानता है, लड़के...

और अगर तुमने उसका पता मौसमी को नहीं बताया तो मेरे इशारे पर बरसती बिजलियां तुमको खाक में बदल देंगी!
जज्जुला यानी इंस्पेक्टर का पता? उसका पता तो मैं भी ढूंढ रहा हूं! लेकिन तुम उसको ढूंढने के चक्कर में इस शहर पर मुसीबत क्यों बरसा रहे हो?
मौसमी का दूसरा नाम ही मुसीबत है! और हमारी जानकारी यह बताती है कि जब तक तुम मानवों के सिर पर मुसीबत नहीं टूटती, तब तक तुम सच नहीं उगलते!
जब तक तुम मुझे यह नहीं बताओगे कि जज्जुला कहां है, तब तक मैं बिजली के वार करता रहूंगा।

जल्दी बता, वर्ना कहीं ऐसा न हो कि तेरी जुबान हमेशा के लिए बंद हो जाए।
मुझे धमकी मत दो मौसमी! अगर तुम सचमुच यह समझते हो कि मैं जज्जुला का पता जानता हूं तो तुम मुझको मार ही नहीं सकते! क्योंकि अगर मैं सचमुच मर गया तो फिर तुमको जज्जुला का पता कौन बताएगा!
मैं तुझको मौत से भी बदतर नजारा दिखाउंगा, तुझको इतनी तकलीफ दूंगा कि तू अपने आप सच उगल देगा!
आऽऽऽह! बिजलियां मुझसे इतनी पास से गुजर रही हैं कि मुझको जलाएं नहीं सिर्फ झटका लगाएं! लेकिन ये झटका भी मुझे बेहद तकलीफ दे रहा है!

आऽऽऽह! मेरी बात का यकीन करो मौलवी! मुझको सचमुच जज्बुका का पता नहीं मालूम.
तुम अगर मुझको पूरी बात बताओ तो शायद मैं तुम्हारी मदद कर सकूं!
तुमको अभी भी डर नहीं लग रहा है!
तुम्हारे दिल में और डर पैदा करना होगा ताकि तुम्हारी जुबान खुल सके।
उस शोले ने स्टार लाईन को गलाबला
और उसके सहारे हवा में थमा हुआ ध्रुव का शरीर जमीन की तरफ रवाना हो गया-
लेकिन जमीन तक पहुंचने से पहले ही उस विद्युत धमाके ने ध्रुव को फिर हवा में उछाल दिया-
और फिर गिरने और उछलने का यह सिलसिला जारी रहा-
ये धमाके एक-एक करके तुम्हारी हड्डियों को तोड़ेंगे उससे बहुत तकलीफ होगी, तुमको!
तुम्हारे पास जुबान खोलने के लिए कुछ ही पल हैं लड़के!

ये सही कह रहा है! मेरी हड्डियां अभी तक तो सलामत हैं, लेकिन एक दो और धमाकों के बाद वे टूटनी शुरू हो जाएंगी!
मौसमी को रोकना होगा! और इसके लिए इसको इसकी ही शक्तियों की एक 'डोज' देनी होगी!
मौसमी चाहे बि को अपने इशारे नचाता हो, लेकिन विज्ञान के को ये भी नहीं सकता।
ओह! तुझे रस्सी अटकाने के लिए इमारतें नहीं मिल रही हैं तो तू मुझमें ही रस्सी अटका है!
... और विज्ञान के अनुसार 'स्टार ब्लेड' गिरती बिजलियों को अपनी तरफ आकर्षित करके उसके झटके को नाइलो स्टील की बनी स्टार लाइनों के जरिए तुम तक पहुंचा देगा!
लेकिन इससे तू धमाकों से बच नहीं पाएगा! वैसे भी मैं अभी तेरी रस्सी को गला दूंगा!
इसका मौका तुमको शायद न मिले मौसमी! क्योंकि मेरा 'सिग्नल-फ्लेयर' रस्सी के दूसरे हिस्से को हवा में ऊपर ले जाएगा...
यही सिद्धान्त ऊंची इमारतों बिजली से सुरक्षित रख लिए प्रयोग में लाया जाता है लगी धातु की नुकीली छड़ यानी चालक गिरती बिजली को अपनी तरफ कर इमारत को नुकसान से बचा

वाह! एकाएक बिजलियां चमकनी बंद हो गई हैं! यानी बिजलियों के झटके ने इसकी बिजलियां गिराने की शक्ति को नष्ट कर दिया है! लेकिन मौसमी अभी भी होश में है! उस पर काबू पाना आसान काम नहीं होगा!
चट्टान के अंदर बैठे और घटना-क्रम पर नजर गड़ाए वे प्राणी भी चकित रह गए-
इसका तो हमको अंदाजा तक नहीं था कि एक मामूली मानव मौसमी को मात दे सकता है!
ये मानव शायद उनसे भी निपट लेगा! इस मानव से हमको सीख लेनी होगी! इसने पहले मट्टाक और अब मौसमी की कमजोरियों को ढूंढा और उनको मात दे दी! हम भी इसको मात तभी दे पाएंगे जब हम इसकी कमजोरी का पता लगा लेंगे!
इसकी कमजोरी का पता मुझे चल गया है! जानते हो कि ये कड़कती बिजलियों से लड़ने के लिए बाहर क्यों निकला? क्योंकि इसको इस नगर और इसके वासियों से प्यार है! उनको बचाने के लिए ये बाहर निकला था! वे ही इसकी कमजोरी हैं!
मौसमी को अभी मात नहीं मिली है! उसकी सिर्फ एक ही शक्ति नष्ट हुई है! बादलों और बिजलियों पर वश की शक्ति! उसके अंदर मौसम को बदलने की अभी कई शक्तियां बाकी हैं!
तुम एकदम ठीक कह रहे हो! मौसमी अब अगला वार नगर और इसके वासियों पर करेगा! फिर जुबान खुलेगी इस मानव की!
मौसमी को हमारा निर्णय सुना दो!

ध्रुव धीरे- धीरे मौसमी पर हावी हो रहा था-
इस पर वार करने से मुझे एक सच्चाई का पता तो चल गया। और वह ये कि ये मौसमी भी मट्टाक की तरह ही एक रोबॉट है! इसको भी मट्टाक की तरह ही तोड़ना होगा! तभी राजनगर पर मंडराता संकट टलेगा!
लेकिन ध्रुव को ऐसा मौका नहीं मिल पाया-
मौसमी के बाजुओं से निकल
के बवंडर ने ध्रुव को उठा कर
लेकिन इस बवंडर का निशाना ध्रुव नहीं-
बल्कि राजनगर के पड़ोस में फैला हुआ रेगिस्तान था-
रेत बवंडर के एक सिरे के अंदर तेजी से खिंचने लगी
और दूसरे सिरे से निकलकर राजनगर में फैलकर शहर को भी रेगिस्तान का हिस्सा बनाने लगी -

देखते ही देखते सड़कें और उन पर खड़े वाहन रेत के अंदर धंसने लगे-
और लगातार बढ़ते हुए रेत के टीलों के अंदर गायब होने लगे-
देख अपने प्यारे नगर को कब्रिस्तान बनते हुए मानव! जल्दी ही रेत के टीलों के नीचे दबे मानव मर जाएंगे। परंतु तू उनको बचा सकता है। मुझे जज्जुला का पता बताकर!
तेरे पास तीक्ष्ण मस्तिष्क है। लेकिन फिर भी तेरे या अन्य मानवों के पास ऐसा कोई साधन नहीं है जिससे वे इन रेत के टीलों को हटा सकें या फिर नगर पर हो रही रेत की बारिश को रोक सकें।
तुम सही कह रहे हो लेकिन हम ये रेत समय रहते नहीं हटा सकते। तेरी आंखों के सामने जान देंगे। और ये नज़ारा तेरी आंखें देख नहीं सकतीं।
इसीलिए रेत में दबकर सबसे पहले जाने वाली जान...
मैं जज्जुला का पता नहीं जानता मौसमी!
फिर झूठ! अब या तो तू अपनी ज़िद छोड़ेगा या तेरे नगरवासी अपनी जान!

...मेरी होगी!
अरे! अरे! ये तो आत्म-हत्या पर उतारू हो गया! अब क्या करूं?
उड़ती चट्टान के अंदर-
ओफ! इन मानवों को हम
समझ नहीं पाएंगे। अगर
सचमुच मर गया तो
मर गए! फिर हमको
रहते जज्जुला का पन
नहीं चल पाएगा!
अब क्या करें, ये तो बताओ!
मौसमी को आदेश दो कि वह इस लड़के को ढूंढे! रेत के अंदर जिन्दा बाहर निकाले!
मौसमी आदेश मिलते ही सक्रिय हो गया-
वह लड़का यहीं पर तो रेत में कूदा था! लेकिन यहां की रेत तो मैंने हटाकर वापस रेगिस्तान पहुंचा दी; पर उसका कोई अता-पता नहीं है, ... शायद एक जैसा लगने के कारण मैं सही जगह को भूल रहा हूं!
अब मैं यहां की रेत हटाता हूं! शायद यहां पर वह रेत में कूदा हो!
रेत के टीले बवंडर में वापस खिंचकर फिर से रेगिस्तान में पहुंचने लगे-
और कुछ देर के बाद-
सारी रेत हट गई! पर वह लड़का कहीं नहीं मिला!
बवंडर के अंदर
नहीं
गया है
ऐसा ही
हुआ होगा

मैं अभी तक तुम्हारे पास ही मौजूद हूं!
तुम यहां कैसे? तुम तो मेरे सामने रेत के पहाड़ के अंदर धंस गए थे!
हां, धंसा था! और मेरे धंसने से रेत का जो गुबार उठा था, उसकी आड़ में मैं तुरन्त रेत के बाहर भी निकल आया था! गुबार के कारण तुम मुझे निकलता हुआ देख नहीं पाए!
लेकिन तुमने ऐसा किया क्यों?
तुमने ही मुझे बताया था कि हम मानवों के पास इतनी ढेर सारी रेत को जल्दी हटाने के साधन उपलब्ध नहीं हैं, और तब मुझको याद आया कि मेरे पास ऐसा कर सकने का एक साधन है। और वह साधन तुम थे!
बस तुमको रेत हटाने के लिए मजबूर करना था! और ऐसा मैंने आत्महत्या का नाटक करके किया!
मुझको पता था कि तुम बिना जज्जुला का पता जाने मुझको मरने नहीं दोगे! और मुझको बचाने की कोशिश में रेत को हटा दोगे!
तुमने ठीक वैसा ही किया और यह शहर बच गया!
उड़ती चट्टान के अंदर-
हा हा हा हा!
ये मानवों की तरह आवाजें क्यों निकाल रहे हो?
इसको हंसना कहते हैं! मानव इस ध्वनि का प्रयोग खुश होने पर करते हैं! कभी पागल हो जाने पर भी वे ये आवाज निकालते हैं, और कभी अपनी मूर्खता का आभास होने पर हंसते हैं!
मैं भी मूर्खता का आभास होने पर हंस रहा हूं!
मूर्ख यानी मंद बुद्धि! अरे, हम तो महा-बुद्धिमान हैं!
अगर हम बुद्धिमान होते तो इस मानव से लड़कर यूं समय को व्यर्थ न करते! इस मानव ने हमको यह तीसरी मात दी है!
और ऐसा करके इसने अपने आपको हमसे ज्यादा बुद्धि वाला सिद्ध कर दिया है!
अब बुद्धिमानी इससे लड़ने में नहीं इसको सच्चाई बताकर इसकी मदद लेने में है!
वर्ना हम इससे लड़ते रहेंगे, और जज्जुला शक्ति प्राप्त करना असम

तुम सच कह रहे हो! इस मानव ने हमारा अपनी शक्ति पर गर्व भी चूर-चूर कर दिया है, और हमको अपनी योजना बदलने पर मजबूर भी कर दिया है! इस मानव को यहां पर लाने का प्रबंध करो!
नीचे-
बोलो! अब कौन सा वार करोगे मौसमी? ज्वालामुखी फोड़ोगे या सागर में ज्वार लाओगे?
तुमको जुबान खोलने को मजबूर करूंगा! लेकिन इस बार तरीका ऐसा होगा, जो तुमको भी बोलने पर मजबूर कर देगा!
कैसे?
ऐसे!
ध्रुव का शरीर रोशनी की चमक में गुम होता चला गया-
और जब रोशनी धीमी होनी शुरू हुई-
तो ध्रुव ने अपने- आपको एक नए माहौल में पाया-
य... ये मैं कहां आ गया हूं?
उत्तेजित मत हो मानव...

हमने तुमको नुकसान पहुंचाने के लिए यहां पर नहीं बुलाया है।
तुम इस वक्त उसी चट्टान के अंदर हो, जिसको तुमने इस नगर के ऊपर उड़ता हुआ देखा था।
ओह, यानी वह चट्टान... मेरा मतलब... यह चट्टान एक यान है। मैं तो इसको उल्का समझ रहा था। लेकिन ये सब चक्कर क्या है? तुम लोग हो कौन और ये जज्जुल कौन है, जिसको तुम सभी ढूंढते फिर रहे हो।
यह समझने के लिए तुमको हमें थोड़ा समय देना पड़ेगा, ताकि हम तुमको शुरुआत से पूरी कथा सुना सकें!
हम एक सुदूर ग्रह के प्राणी हैं। आज से कुछ समय पहले तक हम ब्रह्माण्ड की एक खुशहाल और प्रगतिशील प्रजाति थे। हमने विज्ञान में बहुत प्रगति की। लेकिन कुछ समय पहले एक पुच्छल तारे के जरिए एक सूक्ष्मजीवी वायरस हमारे ग्रह पर आ पहुंचा! यह वायरस अपने आप में एक समझदार प्राणी था। इसने हमारे शरीरों में घुसकर बीमारी पैदा करनी शुरू कर दी!

हमारी प्रजाति तेजी से खत्म होने लगी! महामारी फैलने लगी! हमने जल्दी ही इस वायरस जज्जुला का इलाज ढूंढ निकाला! लेकिन जल्दी ही जज्जुला ने उस इलाज के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली-
हम नए-नए इलाज ढूंढते गए, पर जज्जुला हर इलाज के खिलाफ नई-नई प्रतिरोधक क्षमताएं पैदा करता चला गया! जज्जुला सिर्फ हमारी प्रजाति को मार ही नहीं रहा था, बल्कि बीमार जीवों के शरीर पर इस तरह से कब्जा भी करता जा रहा था कि वे बीमार प्राणी ही उसके वश में होकर बीमारी को और फैला रहे थे-
देखते ही देखते हमारे ग्रह पर गिने चुने ही जिन्दा प्राणी बचे थे। पर अब तक हमने ऐसी दवाई ढूंढ निकाली थी, जिसके खिलाफ जज्जुला प्रतिरोध विकसित करने के बावजूद भी मारा जाता!
लेकिन इस दौरान जज्जुला ने विषाणु हम सभी प्राणियों के शरीर में फैला दिए थे। अब अपने अस्तित्व को कायम रखने का एक ही रास्ता हमारे पास था।
और वह था अपने डी.एन.ए. को सुरक्षित रखना, ताकि उसकी मदद से हम जज्जुला को मारने के बाद फिर से अपनी प्रजाति को विकसित कर सकें!
इतनी प्रगति तो पृथ्वी पर भी हो चुकी है कि डी.एन.ए. की मदद से किसी पूरे जीव को विकसित किया जा सके!
हम जानते हैं! लेकिन हमारी समस्या दोहरी थी! डी.एन.ए. सुरक्षित रखने के साथ-साथ हमको जज्जुला को भी खत्म करना था! इस बार भी हमारे विज्ञान ने हमारी मदद की!
हमने ऐसे रोबॉट बनाए, जो जैविक ऊर्जा से चल सकते थे, और अपने डी.एन.ए. को उन रोबॉटों के अंदर स्थापित कर दिया!
मट्टाक और मोप्ली ऐसे ही रोबॉट थे, और तुम्हारे सामने वाले रोबॉटो के अंदर भी हमारा डी.एन.ए. रखा हुआ है!
हम इसी प्रकार से जीवित हैं!
ओह, समझा! यानी मट्टाक के टूटने पर जो ऊर्जा निकलकर आकाश की तरफ गई थी, वह जैविक ऊर्जा ही थी!
हां, उसके जरिए मट्टाक के शरीर में मौजूद हमारे डी.एन.ए. वापस चक्कर यान में आ गए थे!
पर आगे तो सुनो! समय कम है! जब जज्जुला को पता चला कि हम उसको मार सकते हैं...
...लेकिन उसका वायरस हमारे मशीनी शरीरों पर बेअसर है...

तो उसने ग्रह पर जिन्दा बचे आखिरी जीव के शरीर पर कब्जा करके ग्रह से भागने की कोशिश की। पर हम उसके पीछे लग गए, और लगे रहे। और पृथ्वी के पास आते-आते हमने उसको पकड़ ही लिया।
हमारे पास उसको खत्म करने का सिर्फ यही एक मौका था, इसलिए हमने उसको नष्ट करने के लिए जो दवाई थी, वह पूरी दवाई हमने एक साथ उस पर दाग दी। जो चट्टान तुमने हवा में टूटते देखी होगी, उसमें यही दवाई भरी थी।
लेकिन वह चट्टान तो दूसरी चट्टान तक पहुंचने से पहले ही टूट गई थी।
हां! जज्जुला सतर्क था!...
उसने चट्टान को हवा में ही नष्ट कर दिया। लेकिन फिर भी हवा के कणों ने उसे काफी हद तक कमजोर कर दिया था। इस कारण वह अपने यान पर नियंत्रण खो बैठा। और यान पृथ्वी से जा टकराया।
बस! आगे की कहानी मैं जानता हूं। लेकिन जज्जुला पृथ्वी के लिए खतरा कैसे बन सकता है?
हम समझते थे कि जज्जुला में सिर्फ हमारी प्रजाति से ही बीमारी पैदा करने और शरीरों पर कब्जा कर सकने की क्षमता है। लेकिन उसने इंस्पेक्टर के शरीर पर कब्जा करके यह सिद्ध कर दिया कि वह पृथ्वीवासियों में भी महामारी फैला सकता है! इसलिए उसको ढूंढना अत्यंत आवश्यक है। यह पृथ्वी वासियों के लिए जिन्दगी और मौत का सवाल है!
समस्या वाकई गंभीर है! अब तो सोचना ही पड़ेगा कि इंस्पेक्टर उर्फ जज्जुला आखिर इस वक्त कहां पर हो सकता है?
डॉक्टर वायरस अपने ठिकाने पर वापस नहीं आया। यानी वह जुलू के ठिकाने पर गया होगा।
मैं जानता हूं कि जुलू का ठिकाना अफ्रीका के लोबांगा के जंगलों में कहीं पर है।
उसको ढूंढना ज्यादा मुश्किल काम नहीं होगा।
चलो! मैं तुमको जज्जुला के पास ले चलता हूं।

ध्रुव की जानकारी में नहीं थी। लेकिन लेबांसा का घना जंगल, हजारों वर्ग किलोमीटर के दायरे में फैला था। और उस जंगल के अंदर जुलू का अड्डा कहां पर था, यह तो खुद जुलू भी कभी-कभी भूल जाया करता था-
एक बार फिर सोच लो वायरस! तुम जो कह रहे हो वह करने का इंतजाम तो मैंने कर दिया है। लेकिन यह जानलेवा भी हो सकता है!
घबराओ मत जुलू! मैंने इसे टेस्ट कर लिया है। इन इंस्पेक्टर के शरीर के अंदर जो घातक वायरस छिपा हुआ है, वह मुझे ये दवाई पीने के बाद मार नहीं सकता! सिर्फ मुझको बेहिसाब शक्तियां दे सकता है! जो कि इसने इंस्पेक्टर को दी थीं।
और उसके बाद हम और तुम इस दुनिया पर राज करेंगे!
ठीक है वायरस! लेकिन याद रखना! मैं जो वायरस ट्रांसफर का तरीका अपना रहा हूं उसके बाद ये वायरस तुम्हारे शरीर से निकल नहीं पाएगा और इसको मारने का कोई तरीका हमारे पास नहीं है!
तुम हमेशा के लिए डॉक्टर वायरस से 'वायरल मैन' बनकर रह जाओगे!
ये मंजूर हो तो इस खाली स्ट्रेचर पर लेट जाओ!
मंजूर है जुलू! पॉवर के लिए मुझे सब मंजूर है!

बायरस के लेटते ही, जज्जुला बायरस के रूपांतरण की प्रक्रिया शुरू हो गई-
लेकिन प्रक्रिया शुरू होते ही-
अरे, ये सिग्नल! यानी मेरे अड्डे की तरफ कोई आ रहा है। चारों तरफ कांटेदार बाड़ें लगी हुई हैं। इसलिए कोई जानवर यहां नहीं आ सकता। कोई और खतरा है। मुझे देखना होगा।
बाहर आते ही जुलू को खतरा सामने नजर आ गया-
ध्रुव! तुम... तुम यहां तक कैसे पहुंच गए? यह जगह तो अत्यंत गुप्त है!
इंसानों के लिए होगी, लेकिन जानवरों के लिए जंगल का कोई स्थान गुप्त नहीं होता है! यह स्थान भी नहीं है! और इसका पता मुझको इस जंगल के पशु-पक्षियों ने ही बताया है!
बताओ, जज्जुला कहां है! वर्ना इस जंगल में ऐसी आग लगाऊंगा कि तुमको भागने का रास्ता ही नहीं मिलेगा!
जज्जुला तुमको जरूर मिलेगा! लेकिन थोड़ी देर बाद एक नए रूप में मिलेगा! तब तक तुम किसी और से मिलो...

मेरे बनाए 'सिंबाद्री' से ! भूलो मत कि ये जुलू का इलाका है! और यहां के चप्पे-चप्पे पर जुलू के बनाए आविष्कार फैले हुए हैं!
सिंबाद्री ? सिंबाद्री क्या होता है ?
ये होता है सिंबाद्री! सिंबा यानी शेर और द्री मतलब पेड़! वृक्ष और शेर की प्रजातियों को मिलाकर बनाया गया मेरा एक अद्भुत आविष्कार!
ये क्या चीज है? मुझे पता नहीं था कि पृथ्वी पर ऐसे प्राणी भी होते हैं!

इसके अंदर मुझको फाड़ने की क्षमता भी है और तुमको पीस डालने की क्षमता भी है! और मुझे नहीं लगता कि हमारे वार इस पर ज्यादा असरदार साबित होंगे!
होंगे ध्रुव.
मौजूद हैं ताकि हमारे वार असरदार हों!
ये शेर भी है, और पेड़ भी!
और पेड़ों को बड़े आराम से...
...आग द्वारा जलाया जा सकता है!
नहीं, मौसमी! रुक जाओ! बुझा दो इस आग को!
एक सिंबाट्री को मारने के लिए हम इतनी बड़ी कीमत नहीं चुका सकते!
इसको खत्म करने का एक तरीका और है! पेड़ जड़ों के सहारे ही जिन्दा रहते हैं!
इसकी जड़ें जमीन से उखड़ जाएं तो सिंबाट्री खुद ब खुद मर जाएगा।
पर क्यों ध्रुव? देखो, सिंबाट्री से लपटें निकलनी शुरू हो गई हैं!
ऐसे आग पूरे जंगल में फैल सकती है! और उस आग से हजारों पशु-पक्षी तो मारे जाएंगे, साथ ही साथ हजारों पेड़ भी नष्ट हो जाएंगे! और हमारी पृथ्वी पहले ही पेड़ों की कमी के कारण पर्यावरण की समस्याओं से जूझ रही है।

सिंवाट्री की जड़ें, जमीन से उखड़ गईं-
लेकिन-
ओह! इसको तो हमने और खतरनाक बना दिया है। ये कमजोर तो नहीं हुआ, लेकिन जड़ें जमीन से उखड़ जाने के बाद ये चलता-फिरता खतरा जरूर बन गया है।
मौसमी अपने-आपको अगले वार से नहीं बचा पाया-
मौसमी!
मुझे मौसमी को बचाना होगा! और इसको बचाने का एक ही तरीका है।
जुल्लू पर वार करना! जुल्लू के पास ऐसा कोई रिमोट जरूर है, जिसके जरिए ये सिंवाट्री को चला रहा है! इसी ने इसको जगाया है, और यही इसको रोकेगा!
ये कमजोर होगा जरूर! लेकिन कुछ घंटों के बाद! और तब तक ये तुम दोनों को चबा चुका होगा!
तू मुझे क्यों मार रहा है? मैं समझ गया! तू समझ रहा है कि मेरे पास कोई रिमोट है, जिससे कि मैं सिंवाट्री को चला रहा हूं!

अब तू!
पहले सिंवाड़ी को मरता देख, फिर अपनी जान बचाने की सोच।
ओफ़! अब कैसे रोकूं इस सिंवाड़ी को!
अब अपने दोस्तों की मदद लेता हूं!
चीं चीं चीं चीं च!
कुछ ही पलों बाद कई कठफोड़वे सिंवाड़ी पर टूट पड़े-
और उनकी चोंचें सिंवाड़ी के लकड़ी के शरीर में सुइयों की तरह चुभने लगीं-
सिंवाड़ी के जबड़े चिल्लाने के लिए खुले और मौसमी का शरीर बाहर आ गिरा-
मौसमी! तुम ठीक तो हो न?
कुछ, कुछ, मेरे कई सर्किट टूट गए हैं! तुम हमारी चिन्ता छोड़ो. हमारे डी. एन. ए. तो जैविक ऊर्जा द्वारा वापस यान में पहुंच जाएंगे. तुम सिंवाड़ी से निपटकर जज्जुला तक पहुंचने का रास्ता तलाश करो.

मुझे अभी भी पूरा यकीन है कि इस मुसीबत को रोकने का एक ही तरीका है! और वह है जुलु को रोकना! लेकिन जुलु ऐसा क्या कर सकता है जिससे कि वह सिंबाद्री को कंट्रोल कर सके! यस, याद आया! एक तरीका है!
चीं चीं चीं चीं चीं च!
तरीका जो कुछ भी था-
उसे आजमाने का मौका ध्रुव को नहीं मिला-
आऽऽऽह!
मुझे सिंबाद्री ने जकड़ लिया है!
और अब तेरा बदन अकड़ेगा! मरने के बाद!
आऽऽऽह! मैं अब बच नहीं सकता! लेकिन मैं ऐसी मौत नहीं मरना चाहता!

और कैसी मौत चाहता है तू?
मैं किसी कठपुतले के हाथों मरना नहीं चाहता. मुझे मारने वाला कम से कम मेरे बराबर का तो होना ही चाहिए.
मुझे मारना है तो तुम अपने हाथों से मेरी जान लो.
वाह! तूने तो मेरे दिल की बात कह डाली!... आ, तुझे मैं ही हलाल करता हूं!
ध्रुव का जबड़ों में फंसा हाथ जुलू की तरफ उठने लगा-
पास आते ही जुलू के हाथ में थमा चाकू ध्रुव की गर्दन की तरफ बढ़ा-
और ध्रुव का हाथ, बगल में उड़ते कठफोड़वे की चोंच में दबी पत्तियों की तरफ बढ़ा-
आक! आssss ये... खौं... खौं... क्या किया तूने? आ! लेकिन पत्तियां भला मेरा क्या बिगाड़ सकती हैं!
और चाकू ध्रुव की गर्दन तक पहुंचते से पहले ही ध्रुव का हाथ उन पत्तियों को जुलू के गले के नीचे उतार चुका था-
अब मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा! शिवा ही के जबड़े तुझको पीस डालेंगे.

अब सिंबाद्री के जबड़े किसी को नहीं पीसेंगे। लेकिन तू जेल की चक्की जरूर पीसेगा, जुलू!
तड़ाक
ये... ये कैसे हो गया? सिंबाद्री पर मेरा नियंत्रण समाप्त हो गया और तू आजाद हो गया, पर ये हुआ कैसे?
ये तब हुआ, जुलू, जब मुझको ध्यान आया कि तुम वैज्ञानिक होने के साथ-साथ अफ्रीकी तंत्र-मंत्रों के विशेषज्ञ भी हो! यह बात ध्यान में आते ही मुझे यह भी याद आया कि सिंबाद्री के हरकत में आने से ठीक पहले तुमने उसकी पत्तियां तोड़कर खाई थीं!
हम इंसान इन पेड़-पौधों के बारे में ज्यादा नहीं जानते, लेकिन पशु-पक्षियों को इनका अच्छा ज्ञान होता है! और इसी कारण से वे पौधे और वनस्पतियां खाकर अपने रोग स्वयं ठीक कर लेते हैं!
इस बार भी ऐसा हुआ और मेरे पूछने पर कठफोड़वे ने मुझे सिंबाद्री के पत्तों के रसायनों की काट करने वाले पौधे की पत्तियां मुझे ला दीं!
मैं समझ गया कि उन पत्तियों के रसायनों ने ही जादुई तरीके से तुम्हारा संपर्क सिंबाद्री से कर दिया था!
और इस तरह से तुम सिंबाद्री को अपने नियंत्रण के द्वारा चला रहे थे!
वही पत्तियां खाते ही सिंबाद्री की पत्तियों का असर तुम्हारे शरीर में से नष्ट हो गया और तुम्हारा संपर्क सिंबाद्री से कट गया!

ल के बेहोश होते ही
ध्रुव का ध्यान मौसमी
तरफ मुड़ गया-
मौसमी! संभालो अपने आपको!
जज्जुला से निपटने के लिए मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत पड़ेगी!
हमारी जैविक ऊर्जा बहुत क्षीण हो गई है ध्रुव! पर हम उसे बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं!
अब तेरी जैविक ऊर्जा बढ़ेगी नहीं, बल्कि नष्ट होगी! एकदम खत्म होगी! खल्लास!
खत्म हो गया न मौसमी।
डॉक्टर वायरस! तुमको ये क्या हो गया है? तुम्हारा रूप कैसे बदल गया है?

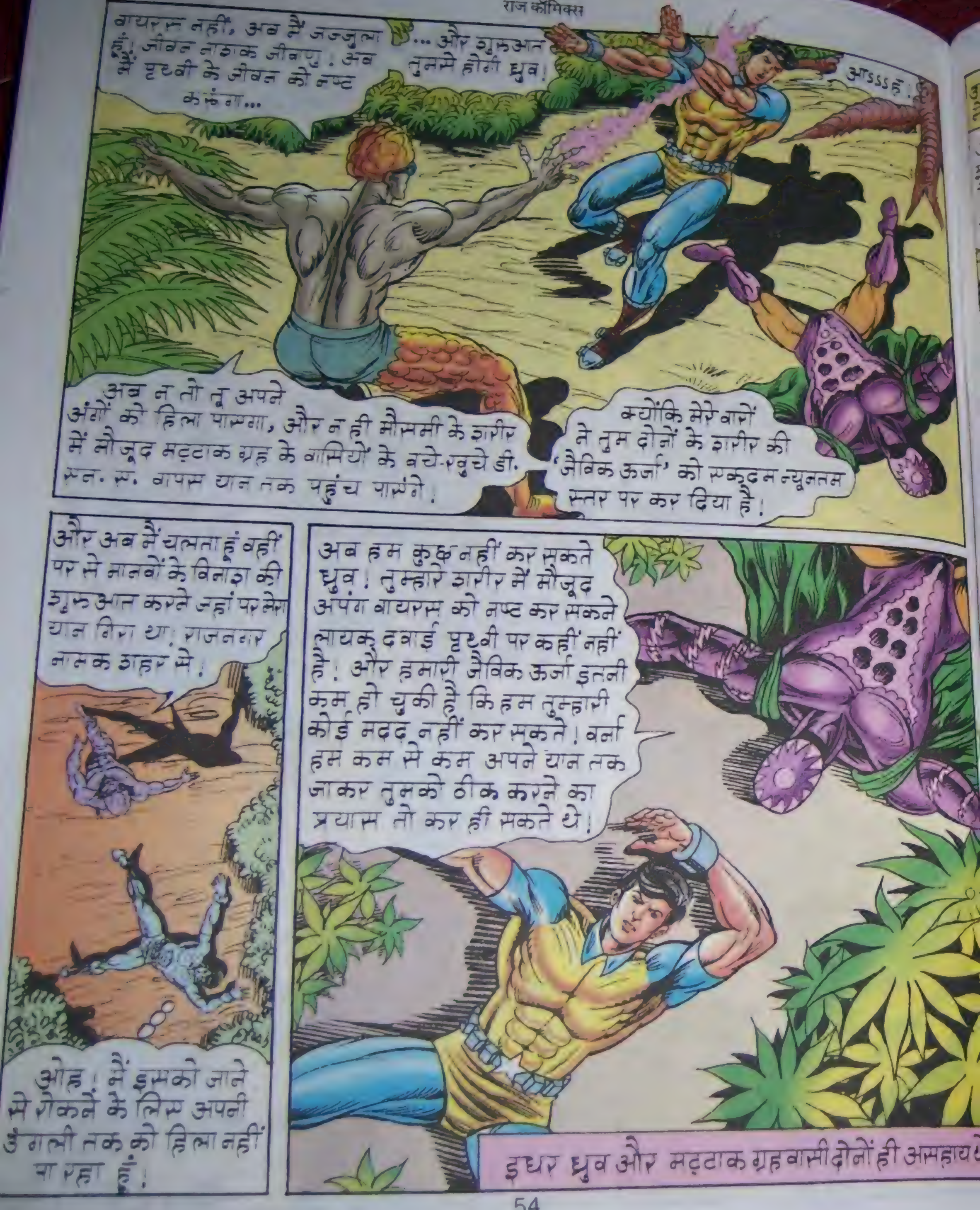
वायरस नहीं, अब मैं जज्जुला हूं! जीवन नाशक जीवाणु! अब मैं पृथ्वी के जीवन को नष्ट करूंगा...
...और शुरुआत तुमसे होगी ध्रुव!
आऽऽऽह!
अब न तो तू अपने अंगों को हिला पाएगा, और न ही मौसमी के शरीर में मौजूद मट्टाक ग्रह के वासियों के बचे-खुचे डी. एन. ए. वापस यान तक पहुंच पाएंगे!
क्योंकि मेरे वारों ने तुम दोनों के शरीर की 'जैविक ऊर्जा' को एकदम न्यूनतम स्तर पर कर दिया है!
और अब मैं चलता हूं वहीं पर से मानवों के विनाश की शुरुआत करने जहां पर मेरा यान गिरा था! राजनगर नामक शहर से!
अब हम कुछ नहीं कर सकते ध्रुव! तुम्हारे शरीर में मौजूद अपंग वायरस को नष्ट कर सकने लायक दवाई पृथ्वी पर कहीं नहीं है! और हमारी जैविक ऊर्जा इतनी कम हो चुकी है कि हम तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकते! वर्ना हम कम से कम अपने यान तक जाकर तुमको ठीक करने का प्रयास तो कर ही सकते थे!
ओह! मैं इसको जाने से रोकने के लिए अपनी उंगली तक को हिला नहीं पा रहा हूं!
इधर ध्रुव और मट्टाक ग्रहवासी दोनों ही असहाय

उधर डॉक्टर वायरस के शरीर में घुसे जज्जुला ने राजनगर में कत्लेआम की शुरुआत कर दी थी-
आऽऽऽ ह! मेरे सारे शरीर में बड़े-बड़े छाले पैदा हो रहे हैं! और इनमें बेतहाशा जलन हो रही है!
मेरा सारा बदन बुखार से तप रहा है! बहुत ज्यादा कमजोरी लग रही है! अब मैं नहीं बचूंगा!
यह काम इसी प्राणी का है. यह महामारी फैला रहा है! इसको खत्म करना ही होगा!
लेकिन हमारे हाथों में तो इतना दर्द हो रहा है कि ये रुई का फाहा तक नहीं उठा सकते!
हा हा हा! जब तक ये मानव मेरे विषाणु से लड़ने लायक दवाई खोज पाएंगे तब तक तो मैं इस मानव नाम के प्राणी का नामोनिशान ही मिटा डालूंगा!
बड़ा मजा आ रहा है इनको मारने में!
ध्रुव! तुम... तुम ठीक कैसे हो गए? तुम तो किसी भी दवाई से ठीक हो ही नहीं सकते थे!
बस! तुम्हारे मजे का समय यहीं पर खत्म होता है जज्जुला.
खैर! मैं तुमको दोबारा ठीक कर देता हूं.

ये ले!
मेरे पास उन सारी शक्तियों का जवाब है, जो तुमने इस शरीर में घुसने के कारण प्राप्त कर रखी हैं जज्जुम!
ये... ये वार तो मट्टाक वासियों के अलावा कोई कर ही नहीं सकता।
यानी... यानी...
...तुम ध्रुव नहीं, मट्टाक के प्राणी हो!
थोड़ा सा सही थोड़ा गलत! मैं तो ध्रुव ही हूं, लेकिन मेरे शरीर में मट्टाक ग्रह के वासियों के डी.एन.ए. ने भी शरण ले रखी है!
जब हम मोंबासा के जंगलों में असहाय पड़े थे तो हमारे दिमाग में यह ख्याल आया! मट्टाक वासियों के डी.एन.ए. मेरे शरीर में मौजूद रोग के विषाणु को मार सकते थे और मेरा शरीर उनको मनचाही 'बायलोजिकल एनर्जी' यानी 'जैविक ऊर्जा' दे सकता था! मट्टाक के डी.एन.ए. उनके यान तक तो नहीं जा सकते थे पर मेरे शरीर तक तो आ ही सकते थे! हमने यही किया...
...और तुमको नष्ट करने के लिए यहां तक आ पहुंचे!
अब मट्टाक भी मानव के शरीर में है और तुम भी! हमारी शक्तियां बराबर की हैं!
अब हमारी आखिरी लड़ाई होगी!
गलत! यह तुम्हारी आखिरी लड़ाई है! मैं तो अभी कई और लड़ाइयां लड़ने के लिए जिन्दा बचा रहूंगा!

आऽऽऽह! फिलहाल ये हम पर भारी पड़ रहा है, ध्रुव! क्योंकि मानव शरीर में ज्यादा देर तक रहने के कारण ये उसकी खूबियों को ज्यादा अच्छी तरह से जान गया है! वैसे भी इसको डॉक्टर वायरस के शरीर के नष्ट होने की कतई परवाह नहीं है, पर हमको तुम्हारे शरीर को नुकसान पहुंचाना गवारा नहीं है!
फिर हम जज्जुला को भला कैसे नष्ट कर सकते हैं!
इसको नष्ट करने का एक ही तरीका था हमारे पास! वह दवाई जो अब पृथ्वी के वातावरण में घुलकर गायब हो चुकी है!
वह दवाई जो राजनगर के ऊपर हवा में टूटने वाली चट्टान के अंदर भरी थी! समझ गया! मुझे मिल गया जज्जुला को नष्ट करने का तरीका!
अब जज्जुला यानी वायरस को वहीं ले चलो जहां मैं कहता हूं!
उस दोहरे बवंडर ने ध्रुव के शरीर के साथ-साथ डॉक्टर वायरस के शरीर को भी उठाकर-
राजनगर के बगल में स्थित रेगिस्तान में पहुंचा दिया-
समझा! तू मुझको यहां पर इसलिए लेकर आया है ताकि मैं और मानवों को नुकसान न पहुंचा सकूं! खैर अच्छा ही है!
यहां पर हम बगैर किसी व्यवधान के लड़ सकते हैं!
तुमको लड़ने का मौका नहीं मिलेगा जज्जुला!
ओह! अब तू यान से नीचे उतरे यंत्र में जा घुसा है! लेकिन मैं ऐसे कई यंत्र तोड़ चुका हूं!

इसका मौका तुमको नहीं मिलेगा जज्जुला!
ये रेत तुझको नुकसान ही नहीं पहुंचाएगी जज्जुला, बल्कि तुझको नष्ट कर देगी!
ये वही रेत है जिसका बवंडर मौसमी के हाथे राजनगर में तबाही लेकर आया था!
ओह! तू मुझको अब रेत से मारेगा! ये रेत मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकती, ये तू भी जानता है!
जब हमने तुझ पर चट्टान में भरी दवाई का वार किया था, तब इस दवाई की कणों का एक बड़ा हिस्सा राजनगर की इमारतों की दीवारों और खिड़कियों पर चिपक गया था!
इस रेत के बवंडर ने उस दवाई को इमारतों पर से खरोंच डाला था!
अब इस रेत में वही दवाई मिली हुई है और रेत के कणों के जरिए तेरे किराए के शरीर तक पहुंचकर तुझे नष्ट कर रही हैं!
आऽऽऽ! तू... तू सच कह रहा है!...
...मैं खत्म हो रहा हूं!...
...मैं खत्म हो रहा हूं!

मैं खत्म हो रहा हूं!
अब तुम्हारे भागने के दिन भी खत्म हो गए हैं, डॉक्टर वायरस! चलो, तुम्हारा दोस्त जुलू जेल की कोठरी में तुम्हारा इंतजार कर रहा है!
और फिर-
हमारी किस्मत अच्छी थी ध्रुव कि हमारा यान जज्जुला के पीछे ऐसे ग्रह पर आ गया जहां पर तुम्हारे जैसा प्राणी रहता है!
अगर तुम मदद न करते और हमको रेत में दवाई मिली होने की बात न बताते तो हम जज्जुला को कभी मार नहीं सकते थे!
अब हम बाकी बची दवाई से मानवों के शरीर में घुसे जज्जुला के दूसरे वायरसों को भी नष्ट करके उनको ठीक कर सकते हैं, और अपने ग्रह पर वापस जाकर अपने डी.एन.ए. के जरिए, अपनी प्रजाति को दोबारा विकसित कर सकते हैं!
तुम्हारा एहसान हम कभी नहीं भूलेंगे! लेकिन वादा करो कि जब हम तुम्हारा सम्मान करने के लिए तुमको अपने ग्रह पर बुलाएंगे तो तुम जरूर आओगे!
मैं वादा करता हूं!
मैं जरूर आऊंगा!